संकलित परीक्षा - II (2013-2014)

हिन्दी 'ब'

कक्षा - IX

निर्धारित समय : 3-3 ½ घण्टे **अधिकतम अंक :100**

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के **पांच खंड हैं - क, ख, ग, घ** और **ड.** ।

(2) **खंड -ड.** मुक्त पाठ पर आधारित है।

(3) पांचों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(4) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड क

(अपठित बोध)

1 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।** 12

आज से कुछेक दशक पहले यदि कोई हम से यह प्रश्न करता कि क्या रोबोट्स अच्छे अध्यापक साबित होंगे, तो निश्चित रूप से हमें प्रश्न करने वाले की बुद्धि पर तरस आता, लेकिन आज के इस वैज्ञानिक युग में यह प्रश्न हमें कुछ सोचने को बाध्य करता है, मेरी दृष्टि में इसका उत्तर होगा, नहीं, ऐसा इसलिए कि शिक्षण का काम सिर्फ शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक भी है और उसके साथ-साथ मनोवैज्ञानिक भी।

रोबोट एक मशीन है, जो मनुष्य के संकेत व निर्देश का अनुपालन करने में समर्थ है, उसमें भावनाओं का आरोह व अवरोह संभव नहीं है, जबकि एक शिक्षक में भावनाओं का होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। आज से नहीं, अपितु पुरातन काल से ही हमारे देश में गुरू शिष्य की लंबी परंपरा रही है, क्या रोबोट के साथ यह परंपरा कायम रहेगी ? गुरू और शिष्य का संबंध भावनात्मक धरातलपर अवस्थित होता है, गुरु के प्रति शिष्य के स्नेह में श्रद्धा व आदर का भाव होता है, लेकिन मशीनी मानव के प्रति शिष्य के हृदय में आदर और श्रद्धा के भाव नहीं पनप सकते तब यह रोबोट द्वारा अध्यापन किए जाने पर अपने आपको संतष्ट नहीं कर सकता।

एक सरल अध्यापन के दौरान मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेना होता है, लेकिन क्या रोबोट द्वारा अध्यापन में मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेना संभव है ? वर्ग के वातावरण व छात्रों के मूड के अनुरूप शिक्षक अपनी पूर्व निर्धारित अध्यापन पद्धति में बदलाव करते हैं, क्या रोबोट ऐसा कर सकता है?

(क) कुछ वर्ष पूर्व हमें किस प्रश्न पर, प्रश्न करने वाले की बुद्धि पर तरस आता, और क्यों ?

(ख) शिक्षण का कार्य किस प्रकार का है ?

(ग) रोबोट क्या है, उसमें क्या संभव नहीं है ?

(घ) हमारे देश में गुरु-शिष्य परम्परा को स्पष्ट कीजिए।

(ङ) रोबोट और गुरु के द्वारा शिक्षण में क्या अंतर रहेगा ? क्यों ?

(च) मनोवैज्ञानिक तथा निर्धारित शब्दों में से प्रत्यय अलग-अलग कीजिए, उन्हीं प्रत्ययों से एक-एक नया शब्द बनाइए।

2 **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए –** 8

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकतकूल-
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।
माँ है वह, इसी से हम बने हैं।
किंतु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के
किंतु हम बहते नहीं है। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएँगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते ?
रेत बनकर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनाएँगे।
द्वीप हैं हम।
यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड़ में।
वह बृहत् भूखंड से हमको मिलाती है।
और यह भूखंड अपना पितर है।
नदी, तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है। मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलो :
यदि ऐसा कभी हो
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से अतिचार-
तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे

यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा, कीर्तिनाशा, घोर कालप्रवाहिनी बन जाए
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर

(क) नदी और द्वीप में क्या संबंध है और कैसे ?

(ख) द्वीप बहने से क्यों डरते हैं ?

(ग) कवि ने नदी को काल प्रवाहिनी क्यों कहा है ?

(घ) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

खण्ड ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

3 (क) निम्नलिखित वर्ण - विच्छेदों के लिए शब्द लिखिए : 5

1. प् + र् + आ + ण् + आ + न् + त् + अ
2. व + इ + ष् + अ + य् + अ

(ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग कीजिए:

प्रबध जग , दाव

(ग) निम्नलिखित शब्दों में से वह शब्द चुनिए जिसमें अनुनासिक चिह्न का प्रयोग होता है :

पाच लगूर

(घ) निम्नलिखित शब्दों में से नुक्ते के उचित प्रयोग वाले शब्द छाँटिए:

हाजिर पकड़

4 (क) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए : 4

(1) पंच + आयत (2) धर्म + अर्थ

(ख) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि विच्छेद कीजिए :

(1) हतोत्साहित (2) वाचनालय

5 (क) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्दों व उपसर्गों को अलग-अलग करके लिखिए : 6

(1) अभियोग (2) संग्राम